ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 214-216
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

कला और साहित्य में नायिका के रूप संदर्भ

डॉ0 अलका तिवारी
एसोसिएट प्रोफेसर– चित्रकला विभाग, एन0ए0एस0 कॉलेज, मेरठ (उ0प्र0), भारत

Received- 10.11.2018, Revised- 16.11.2018, Accepted - 19.11.2018 E-mail: alkatiwari151@gmail.com

सारांश : ***कला संस्कृति का दर्पण होती है। भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान कितना ऊँचा रहा है इसका प्रमाण भारतीय कला में अंकित नारी से मिलता है। भारतीय साहित्य गौकला में नारी को असाधारण स्थान प्रदान किया गया। धार्मिक और लौकिक दोनों प्रकार के साहित्य में, चित्रकला व मूर्तिकला में तथा संगीत और नाट्य कलाओं में नारी के विविध अंकन, उसकी विशिष्टता के द्योतक है। समाज रचना तथा व्यवस्थित विकास में भारतीय नारी की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है। अतः विविध साहित्य के सृष्टाओं तथा कलाकारों ने उसकी शील, सौजन्य तथा करूणा को विशेष रूप से अपनी कृतियों में दर्शाया है। दूसरी ओर चारुत्व तत्वों (सुन्दरता के तत्व) की संवाहिका होने के कारण नारी को सौन्दर्य और कला की अधिष्ठायी आलेखित किया गया है। प्राचीन काल से ही भारतीय कला और संस्कृति में नारी को समुचित सम्मान व स्थान दिया जाता रहा है।***

कुंजीभूत शब्द– कला संस्कृति, भारतीय संस्कृति, प्रमाण, भारतीय कला, साहित्य गौकला, असाधारण ।

प्रकृति में पुरूष का सबसे बड़ा आकर्षण नारी है। प्रकृति में मनुष्य ही नहीं सभी प्राणियों का मुख्य आकर्षण विपरीत योनि ही होता है। यह एक प्राकृतिक नियम सा ही है। क्योंकि इस आकर्षक के बिना सृष्टि को आधार नहीं है। हर कलाकार में प्रेम की भावना विशेषतः शक्तिशाली है।

भारतीय संस्कृति में व्यापक नारी के प्रति उच्च व हीन विचारों की भी विवेचना की गयी है। भारतीय ऋषियों व आचार्यों द्वारा सामूहिक काम, नाट्य व शिल्प इत्यादि के शास्त्रीय ग्रन्थों में पृथक–पृथक दृष्टियों से भारी का वर्गीकरण हुआ है, और नारी के रूप सौन्दर्य के मानदण्डों के विकास एवं उसके नख–शिख निरूपण में प्रयुक्त उपमानों व धारणाओं का विशद विश्लेषण हुआ है।

काव्य नाटक और कामशास्त्र के रचियताओं ने नारी के विविध रूपों, अवस्थाओं, मनोदशाओं तथा स्वभावों का बड़ा सहज मनोहारी वर्णन किया है। नारी के इसी रूप को नायिका भेद कहा जाता है। कामशास्त्र के संदर्भ में व काम भावनाओं के क्षेत्र में, नारी की स्थितियों और प्रतिक्रिया अधिक विविध, जटिल तथा विषम होती है। यही कारण है कि इस विषय के अन्तर्गत नायिका भेद का विस्तार अत्यधिक है और उसमें ही आचार्यों तथा कवियों ने अपनी विवेचनात्मक शक्ति और काव्यात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है। इन रीतिकालीन कवियों ने श्रृंगार रस के आलम्बन नायिकाओं के विविध भेद–प्रभेद वर्णन करके उनके विविध पक्षों का चित्रण किया है। यही कारण है कि यह सारा श्रृंगार रस का विस्तार इस रूप में नायिका भेद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सर्वप्रथम सर्वमान्य नायिकाओं का विभाजन स्वकीया, परकीया व सामान्या में किया गया है। जो नायक के साथ उसके सामाजिक सम्बन्ध पर आधारित है। इसके प्रारम्भ में अंग प्रत्यंगों के आधार पर स्त्रियों के पद्मणी, चित्रणी, शंखनी, हस्तिनी नामक चार भेद किये है।

श्रृंगार एवं काव्य शास्त्र में स्वकीर्या नायिका का स्थान ही सर्वोत्कृष्ट माना गया है। यह नायक की पत्नी होती है। अतः सामाजिक संकोच इसमें नहीं होता। इसके भी कई विभाजन मिलते है। मुग्धा इसमें यौवन का प्रथमोदेक हुआ है। मान मृदुता तो लज्जा की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इसकी विभिन्न अवस्थायें है। यथा अज्ञात यौवना, ज्ञात यौवना, नवोढ़ा आदि। मध्या–पति के सुख की अभिलाषिणी, नायक के परकीया प्रेम की गन्ध पाकर यह मानिनी रूप धारण कर लेती है।

"पलनु पीक अंजनू अधर धरे महाबरुभाल।
आज मिलै सुमली करी भले बनेहो लाल।"
(बिहारी सतसई से)

इसकी भी विभिन्न अवस्थाएं होती है। प्रौढ़ा–यह अनुभवी व खुली होती है। पति के परकीया रमन पर उसे लताड़ देती है।

परकीया– इसमें कामोत्तेजना अधिक होती है। लेकिन इसे लोक का संकोच व सामाजिक भय भी होता है। इसके भी कई भेद होते हैं। 1. विदग्धा– यह प्रेम निर्वाह में पटु होती है। उसके आन्तरिक प्रेमोदेक को केवल नायक ही समझ पाता है। 2. साधारणी– इसके नायक के साथ प्रेम सम्बन्ध क्षणिक होते हैं। वहाँ लोक लज्जा का बन्धन नहीं होता है। इस प्रकार अवस्था भेद के अनुसार भी नायिकाओं के विभिन्न भेद किये गये है। 1. स्वाधीनपतिका– सहृदय व विश्वसनीय

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

तथा पति प्रेम पाने वाली। 2. वासक सज्जा– द्वार पर हरम में नायक की प्रतीक्षा व हृदय में सहवास गमन की तीव्रता लिये हुये। 3. विरहोत्कंठिता– प्रियतम की प्रतीक्षा में प्रायः चित्रों में पत्र पुष्पों पर खड़ी हुई दिखाया गया है। इसी प्रकार 4. खंडिता, 5. विप्रलब्धा, 6. अभिसारिका। इसके भी कई भेद है। दशा के आधार पर, रसमंजरी के रचियता के अनुसार अनेक भेद किये गये है। जैसे गर्विता– प्रेम गुण व रूप के कारण से मानिनी आदि।

वैसे तो नायिकाएँ विभिन्न प्रकार की होती है। परन्तु इसमें से प्रायः कुछ ही स्वरूपों का चित्रण लघु चित्रों में हुआ है। चित्रकारों ने इसी संदर्भ में प्रकृति चित्रण भी अलंकारिक रूप के साथ–साथ, प्रतीकात्मक रूप में परिस्थिति के अनुकूल भी किया है। यदि नायिका विरहोत्कंठिता है तो उसे विलो वृक्ष के नीचे खड़ा दिखाया गया है तथा वातावरण को भी शुष्क रूप में चित्रित किया है और यदि मुदितावस्था में दिखाया हो तो उसे सारस के जोड़े, तेज बहती नदियाँ, उछलती फव्वारे व झूमते हुए फल फूलों के लदे वृक्षों के साथ चित्रित किया है। जिस प्रकार साहित्य में इनका वर्णन मिलता है। उसी प्रकार उनका इतना समर्थ अंकन केवल पहाड़ी चित्रकला में ही सम्भव है। ये सुन्दर नायिकाओं की आकृतियाँ कैसे उभर पायी है, यह समझना कठिन नहीं है। इन श्रृद्धामयी आदर्श नारियों के चित्रण में कांगड़ा की सुन्दर नायिका अपने सौन्दर्य व सजीवता में प्रतिबिम्बित हो आयी है।

प्रेम श्रृंगार संयोग और वियोग की स्थितियों और परिस्थितियों में उभरती नायिका के सौन्दर्य का अंकन पहाड़ी चित्रकला का ध्रुव बिन्दू है।

पहाड़ी चित्रकला में पुरूषों की अपेक्षा नारी अंकन अधिक कलात्मक ढंग से हुआ है। चित्रों को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि नायक को तो केवल नायिका के प्रभाव को बढ़ाने के लिए चित्रित किया गया है। पहाड़ी शैली में कला और प्रकृति सौन्दर्य के साथ नारी अंकन के चित्रों को जितना मुझे देखने का सौभाग्य मिला उससे मेरा मन स्वतः ही पहाड़ी शैली में नायिकाओं की सौन्दर्यात्मकता की और आकर्षित हुआ है। यदि यदि रीतिकालीन साहित्य को पढ़कर उसमें वर्णित निर्मित नायिका के चित्रमय दर्शन के लिए आंखे तरसती है तो यह आंखों की प्यास पहाड़ी कला के चित्रों को देखकर तृप्त की जा सकती है।

नायिकाओं के अंकन में उजले रंग और सूक्ष्म लयात्मक रेखाओं के सामंजस्य से उभरती आकृति सौन्दर्य की निर्मल प्रतिभा है। इन सुकुमार आकृतियों में नायिका की अपार सुषमा है। देह की लावण्य प्रभा है और सुख एक विशिष्ट कांति से दीप्त है।

पहाड़ी शैली को चित्रों ने मिलकर विभिन्न आयाम दिये हे। एक रूप बसोहली के नाम से, दूसरा गुलेर तथा तीसरा कांगड़ा के नाम से प्रसिद्ध है। मिलन व विरह के सबसे अधिक चित्र कांगड़ा व बसोहली कलम में चित्रित है। कांगड़ा कलम में श्रृंगार की विविध मनः स्थितियों का चित्रण हुआ है। कभी मानिनी, कभी वासक सज्जा, कभी विप्रलब्धा, कभी खण्डिता तो कभी अभिसारिका आदि नायिकाओं को विभिन्न रूपों में चित्रित किया है। कांगड़ा कलम की लयात्मक रेखायें, रमणीक रंगों के कोमल संयोजन, आकृतियों के आलेखन तथा प्रकृति के रूपायन से ध्यान आकृष्ट करती है। कांगड़ा कलम से गीत गोविन्द, बिहारी सतसई व केशव के ग्रन्थों के पदों पर अधिकतर नायक–नायिकाओं के चित्र चित्रित है।

बसोहली प्राचीनतम है। बसोहली व कांगड़ा शैली में बने गीत गोविन्द विषयक चित्रों में बहुत अन्तर नजर आता है। दोनों में अपनी शैलीगत विशेषता है, लेकिन कांगड़ा शैली में चित्र अपेक्षतया अधिक सुन्दर और सन्तुलित है।

बिहारी सतसई सम्बन्धी चित्रों में अत्यन्त कलात्मकता और आकर्षण है। विभिन्न परिस्थितियों में नायिका की मुद्रायें सहज ही ध्यान आकर्षित करती है। नायिका को चित्रित करते समय चित्रकार ने रंग व रेखाओं के माध्यम से उसे प्रेमावेग के प्रति सजग पाया है। वह प्रेम और प्रणय की अनेक स्थितियों से गुजरती है। अधिकांश नायिका का कोई न कोई परिधान रक्तवर्णी है, गीत गोविन्द व बिहारी सतसई के चित्रों को देखने से कलाकारों के रंग चयन की भिन्नता पर भी प्रकाश पड़ता है।

उदाहरण के लिए एक चित्र में (कृष्णाभिसारिका) नायिका अंधेरी रात में नीले वस्त्र पहनकर अपने प्रियतम के घर जाते दिखाई गई है। उसकी सखी नायिका को प्रियतम के कक्ष में ले जा रही है। उसके पैर जैसे ठिठक रहे हैं। वह लाज से झुकी हुई है। सखी की उंगली उस ओर उठी है। सखी की लाल हथेली और प्रियतम के कक्ष लके दरवाजे के ऊपर इकट्ठा हुआ लाल पर्दा तदजनित लज्जा की ओर इंगित कर रहा है। अभिसारिका का परिधान तारों भरी रात्रि से मेल खाता है। यहाँ अर्द्धचन्द्र का प्रकाश भी है। बिहारी सतसई के चित्रों में राधा कृष्ण की प्रणय लीला की पृष्ठभूमि उन्मुक्त प्रकृति है।

हिन्दी रीतिकालीन साहित्य में जिस प्रकार नायिकाओं का विभिन्न आधारों पर विविध रूपों में वर्णन किया गया है। उसी प्रकार मध्यकालीन भारतीय चतुर चितेरों ने उन्हें अपने रंग और रेखाओं के द्वारा अभिनव हृदयग्राही चित्रों में साकार किया है। कवि के काव्य धर्म के निर्वाह में लगभग सभी नायिकाओं के रूप गुण का वर्णन अनिवार्य सा हो गया था। लेकिन कलाकारों के साथ ऐसा कोई बन्धन नहीं है। नायिका वर्णन के दो माध्यम वाणी व चित्र है। श्रम व दृश्य इन्द्रियों

के अन्तर तो है ही परन्तु सबसे अधिक अन्तर शब्दों के अर्थ के विस्तार और नयनाभिराम रंगों को सीमित शक्ति होने के कारण दोनों विधाओं में अन्तर होना स्वाभाविक है। अतः कुछ चित्र तो ऐसे लगते है, जैसे कवि के शब्दों को ज्यों का त्यों रंग रूप के माध्यम से चित्रतल पर उतारा है और कुछ चित्र कवि के बहुत पीछे रह जाते हैं। अन्य चित्र देखने पर ऐसा लगता है। जैसे चित्रकार ने नायिका वर्णन में कवि को पीछे छोड़ दिया है और चित्रकार बहुत आगे निकल गया है।

कला एवं साहित्य आरम्भ से ही प्रकृति को साथ लेकर चला है। कही संयोग में प्रकृति रतिभाव को उद्दीप्त करती है, तो कही वह मानव की सहचरी बनकर उससे संवेदना प्रकट करती है। अनेक स्थलों पर वह सन्देश वाहक बनाकर विरह वर्णन की परम्परा साहित्य में प्राचीन काल से उपलब्ध होती है। इस परम्परा में कालिदास कृत 'मेघदूत' उत्कृष्ट रचना है। नायिका भेद वर्षा के भिन्न–भिन्न महीनों में प्रकृति अपना रूप परिवर्तित करती है तथा अपने विभिन्न उपादानों से श्रृंगार करती है। प्रत्येक युग में इस परिवर्तन से सहृदय मानव पर, चाहे वह कवि हो या कलाकार अपना प्रभाव डाला है। प्रकृति की इस शक्ति को पहचानकर कांगड़ज्ञ चित्रकार ने रति भाव को जगाने हेतु प्रकृति का प्रयोग किया है। वातावरण, ऋतु, समय एवं अवस्थानुसार जिस प्रकार के विचारों या उद्दीप्त करने की आवश्यकता है, चित्रकार ने उसी प्रकार का प्राकृतिक वातावरण दर्शक के सम्मुख उपस्थित किया है, गीत गोविन्द के चित्रों में जिसके नायक (कृष्ण) 16 कलाओं से पूर्ण रासमण्डल के नेता है, उनको वृन्दावन तथा गोकुल के करील कुंजों में यमुना किनारे हंसते व मनोविनोद करते दिखाया गया है। चित्रकारों ने प्रकृति का स्वतन्त्र महत्व न मानकर उसे उद्दीपक माना, इसलिये उसने प्रकृति मानवीकरण करने के स्थान पर प्रकृति को मानव भावनाओं से रंचित चित्रित किया है। कवियों ने नायिका के वियोग वर्णन की अनेक पृष्ठभूमियों में कल्पना की है। कही पूर्वानुराग, कही मान, कहीं प्रवास तथा कहीं करुणा जनित विरह का वर्णन है। इस विविध रूपों में कवियों की वाणी वियोग सन्तप्त हृदय के भाव चित्र रचने में सफल रही है। चित्रकार ने भी अपनी तूलिका व वर्ण तकनीक से स्वाभाविक शैली में विरह के चित्रों को भावानुकूल सजोने की चेष्टा की चित्रकार ने विरह की विभिन्न अवस्थाओं यथा शारीरिक क्षीणता, क्लेश, मानसिक सन्ताप के साथ प्राकृतिक उद्दीपनों एवं यौवन की काम पीड़िता एवं वियोग नायिका के चित्रों की अभिव्यक्ति पहाड़ी शैली में की है। जो उसकी विशेषता है।

इस शोध का एक पहलू यह भी है कि जिस प्रकार काव्य में नायिका भेद का मनोरम वर्णन किया गया है। क्या इसी प्रकार चित्रकार ने भी चित्रित किया है। नायिकाओं के हृदय में प्रणय के बीजारोपण के पश्चात् उनके रूप के अंकन लिये बैठता है तो उसके नयन बाण से विद्ध हो स्वयं चित्त को स्थिर नहीं रख पाता। अतः उसका हूबहू अंकन नहीं कर पाता।

चित्रकार चतुर चितेरा तो है, परन्तु नायिका का नयन कटाक्ष या उसका क्षण–क्षण बदलता रूप उसे चित्र का रूप देने में असमर्थ कर देता है। लेकिन प्रकृति नदी के पल–पल बदलने वाले रूप को देखने के अभ्यस्थ पहाड़ी चित्रकार इन नायिकाओं के रूप सौन्दर्य को चित्रित कर उक्त व्यवधानों से मुक्ति पा गया है और यही कारण है कि इन महान साधको ने श्रृंगार का जो अनुपम चित्रण किया है। वह संसार में सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

निष्कर्ष– साहित्य की भांति चित्रकारों ने चित्रों में की नायिकाओं की अभिव्यक्ति की अपूर्ण क्षमता दिखाई है। जिस प्रकार साहित्यकारों ने नायिओं का सुन्दर व मनोरम वर्णन किया है। उसी प्रकार चित्रकारो एवं रूप, रेखा के माध्यम से साक्षात रूप प्रदान किया है यह चित्र दृश्यकाव्य से प्रतीत होते है। साहित्य और कला में नायिका के रूप सन्दर्भ की सीमा यही तक नहीं है अपितु जब तक मनुष्य है नायक नायिका रहने कवि व चित्रकार अभिव्यक्ति के माध्यम से इन्हें नित नये रूप देते रहेंगे और बुद्धिवादी इस शोध का विषय निरन्तर बनाने रहेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बिहारी सतसई, द्वितीय संस्करण, 1968, पृ०सं० 125.
2. शर्मा, विनय मोहन, गीत गोविन्द, प्र०सं० 31
3. तिवारी, डॉ0 भगवान दास, बिहारी सतसई, पृ०सं० 60.
4. मिश्र, विश्वनाथ प्रताप, आचार्य केशव दास, प्र0सं0 282.
5. महाभारत– 13.46.6 उद्धत पाण्डे, डॉ० कमलेश दत्त, भारतीय चित्रकला में नारी एवं रूप विभाग, पृ०सं० 47.

*****